'यही सच है' में अभिव्यक्त शहरी मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

बीज शब्द : *शहरी जीवन, मध्यवर्गीय जीवन, सामाजिक बदलाव, भारतीय जीवन शैली, वैश्वीकरण, सामाजिकमूल्य।*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवनशैली में तीव्र गति से जो परविर्तन हुए, उसने समाज के प्रत्येक वर्ग पर गहरा प्रभाव डाला। जिसके कारण भारतीय मध्यवर्ग की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में भी परिवर्तन आया। किसी भी साहित्यकार के लिए निरंतर परिवर्तित होती इन परिस्थितियों के अनुकूल सामाजिक यथार्थ को व्यक्त कर पाना मुश्किल था। किन्तु, मन्नू भण्डारी ने 'यही सच है' कहानी के माध्यम से इस सच को व्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है। वैश्वीकरण की परिस्थितियों से प्रभावित नवीन जीवनशैली ने जिन सामाजिक मूल्यों एवं विचारों और मान्यताओं को हासिये पर ढकेल दिया था, 'यही सच है' कहानी उसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है।

मंजू देवी
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मध्यवर्ग मानव समाज के विकास की वह रीढ़ है, जिसे अनदेखा करके उपभोक्तावादी सामाजिक, आर्थिक संस्कृति को विकसित नहीं किया जा सकता। ग्लोबलाइजेशन के बाद बदलती परिस्थितियों के सामाजिक यथार्थ को अपने लेखन के माध्यम से समाज के सामने रखना साहित्यकार का पहला उत्तरदायित्व है। सुप्रसिद्ध कथाकार मन्नू भण्डारी ने 'यही सच है' कहानी के माध्यम से शहरी मध्यवर्गीय परिवार के विखराव और उपभोक्तावादी संस्कृति के चक्रव्यूह में फँसकर टूटकर विखरते मानवीय मूल्यों का यथार्थ चित्रण किया है। किसी भी विषय पर चर्चा करने से पूर्व उसका स्वरूप क्या है यह जानना आवश्यक है। मध्यवर्ग पर साहित्यिक क्षेत्र से लेकर ऐतिहासिक क्षेत्र तक अनेक विद्वानों ने अपना-अपना मत व्यक्त किया है। लेकिन सर्वसम्मति से मध्यवर्ग पर कोई निश्चित परिभाषा तय नहीं हो पाई है। सामान्यत: मध्यवर्ग से तात्पर्य उस वर्ग से है जो निम्नवर्ग तथा उच्चवर्ग के मध्य स्थित होता है। जब हम 'मध्यवर्ग' शब्द पर विचार करते है, तो उसकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं पाते। मध्यवर्ग समाज की वह श्रेणीगत इकाई है जो समाज के एक विशेष वर्ग को रेखांकित करती है। मध्यवर्ग पर विचार करते हुए श्यामसुन्दर घोष ने लिखा है- ''यह वर्ग समाज का वह निचला हिस्सा है जो समाज को अनुप्रस्थ ढंग से विभाजित करने पर बनता है और जिसमें कमोवेश कर एक ही रुतबे या ओहदे के लोग सम्मिलित होते हैं। जिनकी विशेष आर्थिक और सामाजिक स्थिति और प्रवृत्ति होती है जो बहुधा उनकी आय, व्यवसाय, शिक्षा और वंश परम्परा से निर्धारित होती है।''[1]

मध्यवर्ग के अन्तर्गत उद्योग और व्यापार के मंझली स्थिति के उद्यमकर्त्ता जैसे शिल्पी, छोटे दुकानदार, किसान एवं वेतनभोगी आदि को सम्मिलित किया जाता है। यह पूँजीवादी मध्यवर्ग सामंती मध्यवर्ग का ही विकसित रूप है। इसको व्याख्यायित करते हुए इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं- ''मध्यवर्ग सामंती वर्ग में व्यापारी और क्लर्कों का वर्ग है, जो पूँजीवाद के उत्थान के साथ-साथ धनी और सत्ताधारी हो गया है। इसे मूलरूप से मध्यवर्ग इसलिए कहा गया क्योंकि यह सामंती समाज में उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच में उठा। निम्न वर्ग तथा अभिजात वर्ग के बीच एक नया वर्ग उठ खड़ा हुआ है यह वर्ग है डॉक्टर, वकील और प्रोफेसर तथा अच्छे पदों पर नियुक्त सरकारी अफसरों का। उच्च, केन्द्रीय और निम्न मध्यवर्ग को उनकी आय और पद के द्वारा ही समझा जा सकता है।''[2] मध्यवर्ग समाज की गतिशील इकाई है। अत: स्वरूप में परिवर्तन होते रहना स्वाभाविक है। मध्यवर्ग का उदय फ्रांस और इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांतियों के परिणाम स्वरूप हुआ और धीरे-धीरे इसका विस्तार सम्पूर्ण विश्व में हुआ।

चूँकि प्रत्येक देश के मध्यवर्ग का उदय वहाँ की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों के आधार पर होता है। अत: किसी एक देश का मध्यवर्ग किसी अन्य देश के मध्यवर्ग से भिन्न प्रकार का होता है। भारत में जिन परिस्थितियों में मध्यवर्ग का उदय हुआ वह अमेरिका, यूरोप आदि अन्य देशों से भिन्न थीं। यह भारत की सामंतवादी व्यवस्था में जमींदार और किसान के बीच व्यावसायिक और प्रशासनिक वर्ग के रूप में मौजूद था। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पूँजीवाद का ही विकसित रूप मध्यवर्ग है।

भारत में आधुनिक मध्यवर्ग का उदय अंग्रेजों के आगमन के बाद हुआ। अंग्रेजों ने आधुनिक मध्यवर्ग के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके आगमन के कारण भारत में सामाजिक, आर्थिक स्थितियों तथा रहन-सहन की प्रणालियों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षित, प्रबन्धक तथा प्रशासनिक वर्ग का उदय हुआ जो पाश्चात्य सामाजिक मूल्यों से अत्यधिक प्रभावित हुआ। मध्यवर्ग के शिक्षितों तथा बौद्धिकों ने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों और मान्यताओं का विरोध किया।

स्वातंत्रोत्तर भारतीय सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में तेजी से बदलाव हुए। वैश्विक बाजारीकरण के परिणाम स्वरूप मध्यवर्ग पर अत्यधिक जिम्मेदारी का बोझ बढ़ा। अत्यन्त व्यस्तता के कारण व्यक्ति आक्रोश तथा मानसिक तनाव जैसे विकारों से ग्रस्त रहने लगा। मानसिक तनाव और उसकी थकान को मिटाने के लिए व्यक्ति को स्वरूपगत लघु तथा कम समय में अधिक मानसिक शांति पा सके, ऐसे मनोरंजन की आवश्यकता महसूस हुई। आधुनिक नवीन साहित्यिक विधाओं में 'कहानी' ने इस जरूरत को पूरा करने का दायित्व बखूबी निभाया।

आधुनिक भारत में हुए सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव सर्वाधिक मध्यवर्ग पर पड़ा। अत: इस दौर के साहित्यकारों ने मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी, अकेलापन, अजनबीपन, बेरोजगारी, पारिवारिक विघटन, यौन वर्जनाओं एवं कुण्ठाओं को अपने साहित्य का प्रमुख विषय बनाया। ग्लोबलाइजेशन के कारण शहरी मध्यवर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव को आधार बनाते हुए मन्नू भण्डारी ने 'यही सच है' कहानी की रचना की। इस कहानी के माध्यम से शहरी मध्यवर्गीय जीवनशैली में होने वाले बदलावों की तस्वीर को उकेरा गया है। वास्तव में 'यही सच है' कहानी में शहरी जीवन के मूल्यों और विचारों के टूटने और विखरने का यथार्थ चित्रण किया गया है। व्यक्ति के जीवन में जो कुछ कोमल है, मानवीय है, वह सब नष्ट हो जाने की व्यथा ही इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है।

मन्नू भण्डारी की बहुचर्चित कहानी 'यही सच है' नई कहानी आन्दोलन की कहानी है। जितने पैनेपन के साथ उन्होंने उपन्यासों के राजनीतिक, सामाजिक यथार्थ को उभारा है उतनी ही गहराई से 'यही सच है' में मध्यवर्गीय जीवन के पारिवारिक संबंधों के विखराव एवं मानवीय मूल्यों के टकराव को चित्रित किया है। 'यही सच है' को आधार बनाकर निर्मित की गई फिल्म 'रजनीगन्धा' की सफलता से इस कहानी की प्रसिद्ध का अन्दाजा लगाया जा सकता है। मन्नू की लोकप्रियता का कारण उनमें अपने आस-पास की जिन्दगी के बारे में उनका चिरपरित दृष्टिकोण एवं व्यवस्था की गहरी समझ है। अपनी सृर्जनात्मक प्रेरणा का आधार बताते हुए वे लिखती हैं- ''पुरुष लेखकों की प्रेरणा तो उनकी प्रेमिकाएँ होती हैं, लेकिन मेरा वैसा कुछ नहीं। बस आस-पास की घटना व्यक्ति अथवा माहौल ही लिखने को प्रेरित करता है।''[3] मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध होने के कारण मन्नू जी को इस पृष्ठभूमि से सम्बन्धित आचार-विचार एवं सामाजिक रहन-सहन का सूक्ष्म ज्ञान था। मध्यवर्गीय समाज की अनेक समस्याओं से संघर्ष करते हुए ही उन्होंने स्वयं को स्थापित किया।

'यही सच है' कहानी के माध्यम से उन्होंने नितान्त नवीन रूप से प्रेम के स्वरूप को प्रस्तुत किया है। उन्होंने परम्परागत आदर्शों की ओट न लेकर वर्तमान चुनौती को स्वीकार करते हुए प्रेम की व्याख्या की है। इस कहानी पर विचार करते हुए वंशीधर मिश्र लिखते हैं- 'यही सच है' में यद्यपि पुराने प्रेम त्रिकोण को ही उठाया गया है लेकिन इसके पीछे दृष्टि नवीन है। इसमें प्रेम का स्वरूप नितान्त नया और आधुनिक है। शाश्वत न होकर क्षणिक, वायवी न होकर वास्तविक है और अशरीरी न होकर शारीरिक है।''[4] छायावादी प्रेम दृष्टि के विपरीत 'यही सच है' का प्रेम शहरी मध्यवर्गीय दृष्टि का प्रेम है। समाज के घेरे में चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री विरोधी मन:स्थितियों के घात-प्रतिघात से ही अपने भावात्मक जीवन को जीता है।

डायरी के कुछ पन्नों के रूप में प्रस्तुत इस कहानी की नायिका दीपा के जीवन की सबसे बड़ी समस्या अपनी दिशा तय करना है। यह समस्या अकेले दीपा की ही नहीं मध्यवर्गीय जीवन जीने वाले प्रत्येक व्यक्ति की समस्या है। मध्यवर्ग के शिक्षित परिवार में दीपा अपने माता-पिता के साथ पटना में रहती थी। वहीं 18 साल की उम्र में उसे निशीथ से प्यार हो जाता है, किन्तु वह उसे ठुकारा देता है। इसी दौरान उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। वह इस असहनीय दु:ख से मुक्त भी नहीं हो पाती कि उसके भइया-भाभी अपने कर्त्तव्यों को नकारते हुए उसकी जिम्मेदारी उठाने से मना कर देते हैं। मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता को तार-तार कर देने वाली इस घटना के सम्बन्ध में इरा आलोचना करती हुई दीपा से कहती है कि- ''भई, कमाल के लोग हैं, बहन को भी नहीं निभा सके।''[5]

पारिवारिक विघटन मध्यवर्गीय जीवन की एक अहम समस्या है। मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन में पारिवारिक रिस्ते-नाते की भावना का महत्त्व अधिक होता है। लेकिन वैश्वीकरण से उत्पन्न परिस्थितियों ने मानव जीवन के इन मूल्यों को हासिये पर

डाल दिया। सम्बन्धों में आई संवेदनहीनता से दीपा आहत हो उठती है और वह पटना से अनुसंधान करने कानपुर आ जाती है। दीपा के माध्यम से लेखिक ने मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त अकेलापन, निराशा एवं घुटन जैसी समस्याओं को उजागर किया है। समाज में संबंधों का ह्रास सवंदेनहीनता तक पहुँच जाना मनुष्यता के लिए खतरनाक है।

कानपुर में अनुसंधान के दौरान दीपा की मुलाकात संजय से होती है। उनका यह परिचय ही धीरे-धीरे गहरे प्रेम में तब्दील हो जाता है। किन्तु, संजय निशीथ को लेकर कभी-कभी सशंकित हो उठता है। दीपा संजय की मन:स्थिति समझ जाती है। वह उसे विश्वास दिलाती हुई कहती है- ''विश्वास करो संजय, तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था।'' आज के युग में प्रेम का स्वरूप भी बदला है। पहले की स्त्रियाँ एकनिष्ठ प्रेम करती थीं, चाहे उन्हें कितनी ही यातना या कष्ट क्यों न झेलने पड़े, किन्तु आधुनिक नारी ने इस परम्परावादी जंजीर को तोड़ा है। वह भी पुरुषों के समान एक रास्ता बन्द होने पर दूसरा रास्ता खोज लेती है। यही सच मन्नू भण्डारी ने भी दीपा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। निशीथ जब दीपा को ठुकरा देता है तो वह संजय को अपना जीवन साथी चुन लेती है। इतना ही नहीं वह निशीथ से घृणा करने लगती है। यद्यपि पुरुष सत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा नारी के प्रेम को ठुकरा देना, उसकी संवेदनाओं को तार-तार कर देना सदैव की प्रवृत्ति रही है। यहाँ अधिकतर स्त्रियाँ शोषित और कुण्ठित होकर नीरसता पूर्ण जीवन ढ़ोने को मजबूर होती हैं। किन्तु दीपा एक मध्यवर्गीय स्त्री होने के साथ शिक्षित और बौद्धिक भी है। वह अपने जीवन की दिशा खुद तय करती है। उसकी इसी विशेषता से प्रभावित होकर कमलेश्वर लिखते हैं- ''दीपा अपने नितांत प्रमाणिक संदर्भो और प्रसंगों से जुड़ी हुई है।''[7]

वैश्वीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानवीय मूल्यों और नैतिक आदर्शों को अपने स्थान पर नहीं रहने दिया है। परिणाम स्वरूप सामाजिक संस्कृति का 'ास तीव्र गति से हो रहा है। 'यही सच है'- में संस्कृति का 'ास तब दिखता है जब दीपा के लिए कलकत्ता से इन्टरव्यू का बुलावा आता है। इन्टरव्यू को लेकर दीपा डरती है तो संजय इन्टरव्यू में होने वाले भ्रष्टाचार का पर्दाफास करता हुआ कहता है- ''देखो, आजकल ये इन्टरव्यू आदि तो सब दिखावा मात्र होते हैं। वहां किसी जान-पहचान वाले से इन्फ्लूएंस डलवाना जा करा।''[8] बढ़ते बाजारीकरण के कारण भ्रष्टाचार की जड़े अधिक मजबूत हुई हैं। आज की संस्कृति में व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा और उसके मूल्यबोध दाँव पर लगे हैं। ऐसी सामाजिक व्यवस्था के कारण ही व्यक्ति हर जगह असुरक्षित महसूस करता है।

वैश्विक स्तर पर बढ़ते व्यापारीकरण के कारण व्यक्ति का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। उसकी व्यस्ततायें पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ चुकी हैं। इस व्यापारिक चक्रव्यूह में फंसकर व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन जीने को मजबूर हुआ है। परिणाम स्वरूप घर और ऑफिस दोनों जगह लड़ाई-झगड़ों की बढ़ोत्तरी हुई। संजय भी ऑफिस के झगड़ों से परेशान है। वह दीपा से इस दु:ख को साझा करते हुए कहता है कि ''तुम्हें यह जॉब मिल जाए तो सच मैं भी अपना तबादला कलकत्ता ही करवा लूँ, हेड ऑफिस में। यहाँ की रोज की किचकिच से तो मेरा मन ऊब गया है।''[9]

मध्यवर्ग का जीवन सदैव ही संघर्षमय रहा है। उसकी बिडम्बना यह है कि जो वह स्वप्न देखता है, वह उच्चवर्गीय समाज के होते हैं, जिनके टूटकर विखरने की पूरी सम्भावना रहती है। मन्नू भण्डारी ने दीपा की इसी मनोदशा का कितना स्वाभाविक और सटीक वर्णन किया है- ''बार-बार मैं यह मान लेती हूँ कि मुझे नौकरी मिल गई और मैं संजय के साथ वहाँ रहने लगी हूँ। सच, कितनी सुन्दर कल्पना है, कितनी मादक! पर इन्टरव्यू का भय मादकता में भरे इस स्वप्न जाल को छिन्न-भिन्न कर देता है...।''[10]

उच्च वर्ग को पाने तथा निम्न वर्ग को त्यागने की छटपटाहट ही इस वर्ग को परिवर्तनशील, सृजनशील और संघर्षशील बनाती है। यही कारण है कि एक तरफ मध्यवर्ग बौद्धिक क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्वकर्ता है तो दूसरी तरफ अपनी सुविधाओं, लाभ और सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के प्रति सजग और सचेत भी रहता है।

भूमण्डलीकरण पूँजीवाद का ही विकसित रूप है जिसके कारण व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में बुनियादी बदलाव आया है। जिसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग पर पड़ा है। व्यक्ति के मन में सामाजिक हैसियत की लालसा उत्पन्न हुई। उसी पद-प्रतिष्ठा को पाने की जद्दो-जहद में व्यक्ति कभी-कभी स्वयं के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा देता है और न चाहते हुए भी मनमर्जी के विरूद्ध कार्य कर जाता है। कुछ इसी तरह का वाक्या कलकत्ता में दीपा और निशीथ के पुन: मिलने पर होता है। दीपा निशीथ से नफरत करती है। अत: निशीथ की मदद नहीं लेना चाहती। वह उसका विरोध करना चाहती है। वह सोचती है- ''जब वह मेज के पास आकर खड़ा हुआ, तो क्यों नहीं मैंने कह दिया कि माफ कीजिए, मैं आप को पहचानती नहीं। सच मुझे उसे साफ-साफ मना कर देना चाहिए था कि मैं उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहती; मैं उससे नफरत करती हूँ।''[11] किन्तु चाहकर भी दीपा ऐसा नहीं कर पाती। पुरानी यादों को हवा देते हुए निशीथ उससे मिलता भी है और उसकी मदद भी करता है।

आधुनिक काल में नवजागरण की मध्यवर्गीय बौद्धिक प्रवृत्तियों के साथ ही व्यक्ति का जीवन संघर्ष बढ़ा है। इसका एक कारण मध्यवर्गीय आबादी में हुई बेतहासा वृद्धि है। इसमें व्यक्ति

की रोजगारिक क्षमताएं तो घटीं ही, साथ ही बेरोजगारों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। मन्नू भण्डारी मध्यवर्गीय स्त्री होने के नाते इन समस्याओं से लगातार लड़ती रही हैं।

अत: बेरोजगारी की समस्या पर प्रश्न उठाते हुए लिखती हैं- ''डेढ़ सौ की नौकरी तक के लिए खुद मिनिस्टर सिफ़ारिश करने पहुँच जाते हैं, फिर यह तो तीन सौ का जॉब है।''[12] मन्नू भण्डारी की इसी पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुए गुलाब राव हाड़े लिखते हैं- ''मन्नू कालीन समाज का मतलब उस समाज से है जिसमें मन्नू जी उत्पन्न हुई हैं, पली-बड़ी तथा रचना धर्मिता का निर्वाह करते हुए उससे जूझती रहीं और अब भी जूझ रही हैं।''[13]

भारतीय मध्यवर्ग समाज का 'अहं' सर्वोपरि होता है। संघर्षों और समस्याओं से जूझते हुए भी वह अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं करता। इन्हीं मध्यवर्गीय प्रवृत्तियों से युक्त दीपा भी अपने अहं के साथ समझौता नहीं करती। कलकत्ता में इन्टरव्यू के लिए दीपा निशीथ के साथ टैक्सी में जाती है तो टैक्सी का भाड़ा निशीथ दे देता है। लेकिन दीपा को यह बात अच्छी नहीं लगती। वह पश्चाताप करती हुई कहती है- ''टैक्सी के पैसे मुझे देने चाहिए थे। पर अब क्या हो सकता था? चुपचाप हम दोनों अन्दर जाते हैं। मैं अपने आप को सबकी नजरों से ऐसे बचाकर चलती हूँ, मानों मैंने कोई अपराध कर डाला हो।''[14]

भौतिकतावादी युग के व्यक्तित्व की प्रमुख प्रवृत्ति उसकी द्वन्द्वात्मकता है। आज के युग में वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति द्वन्द्व की स्थिति में रहता है किन्तु मध्यवर्गीय व्यक्ति की कल्पनाओं और वास्तविक स्थिति दोनों में अन्तर के कारण वह लगातार द्वन्द्वात्मक स्थितियों से जूझ रहा है चाहे वह सामाजिक या आर्थिक स्थिति हो, चाहे किसी पर विश्वास करने की। आज हर तरह से व्यक्ति असुरक्षित महसूस करता है। इसी प्रकार दीपा भी लगातार द्वन्द्वात्मक स्थिति से संघर्ष करती रहती है। कलकत्ता में दीपा निशीथ को अपने और संजय के प्रेम सम्बन्ध के बारे में बार-बार बताने का प्रयास करती है किन्तु वह सफल नहीं हो पाती और अपनी द्वन्द्वात्मक स्थिति पर खीझ उठती है- ''कोई है जो मुझे कचोटे डाल रहा है। क्यों नहीं मैं बता देती कि नौकरी के बाद मैं संजय से विवाह करूँगी, मैं संजय से प्रेम करती हूँ, वह भी मुझसे प्रेम करता है! वह बहुत अच्छा है, बहुत ही! वह मुझे तुम्हारी तरह धोखा नहीं देगा।''[15] किन्तु वह मौन ही रहती है कुछ भी नहीं बोल पाती। अपनी इस बेबसी पर वह लाचार दिखती है। उसकी आँखें छलछला जाती हैं किन्तु वह निशीथ का विरोध नहीं कर पाती। बल्कि निशीथ से मिलने के बाद दीपा को ऐसा लगने लगता है कि उसका सच्चा प्यार तो निशीथ है। जिस संबंध को टूटा हुआ जानकर वह भूल चुकी थी। उसकी जड़े तो उसके हृदय की अतल गहराइयों में अभी तक जमी हुई हैं। संजय से प्रेम के सम्बन्ध के बारे में वह कहती है कि- ''निशीथ के चले जाने के बाद मेरे जीवन में एक विराट शून्यता आ गई थी, एक खोखलापन आ गया था, तुमने उसकी पूर्ति की। तुम पूरक थे, मैं गलती से तुम्हें प्रियतम समझ बैठी।''[16] दीपा के रिश्ते में कभी ठहराव तो कभी विखराव नजर आता है। वह लगातार इस द्वन्द्वात्मक अवस्था से संघर्ष करती रहती है। यह सच सिर्फ दीपा का ही नहीं बल्कि हर मध्यवर्गीय व्यक्ति की यही मन:स्थिति है।

दीपा के कलकत्ता में रहने पर निशीथ उसकी हर सम्भव मदद करता है। किन्तु कलकत्ता में रहने से लेकर दीपा के कानपुर चले आने तक वह अपने और दीपा के प्रेम के सम्बन्ध में मौन ही बना रहता है। दीपा उसके प्रेम प्रस्ताव का इन्तजार करती रहती है। किन्तु, जब वह कुछ नहीं कहता तो दीपा एक बार फिर टूटकर विखर जाती है। एक बार फिर वह अकेली तन्हा और अवसाद से ग्रसित हो जाती है। उसकी 'किं कर्त्तव्य-विमूढ़:' वाली स्थिति हो जाती है। वह समझ नहीं पाती कि- 'कहाँ जाऊँ? लगता है जैसे मेरी राहें भटक गई हैं, मंजिल खो गई है। मैं स्वयं नहीं जानती, आखिर मुझे जाना कहाँ है। फिर भी निरुद्देश्य चलती रहती हूँ।'[17] इतना तनाव, इतना विखराव, और अवसाद शायद यही मध्यवर्गीय जीवन का सच है। यही संघर्ष व्यक्ति को समाज में जीना सिखा देता है। दीपा भी सामाजिक अनुभवों से सीख चुकी है। वह अब समझ गई है कि निशीथ उसके जीवन का झूठ है और संजय सच। वह जब संजय से मिलती है तो वह उससे लिपट जाती है, और तब महसूस करती है कि- 'यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।'[18] अत: मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन का यथार्थ तथा 'यही सच है' का सच दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों ही समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो समाज को विकसित करने के उत्तरदायित्व के निर्वहन करते हैं।

संदर्भ:-

1. भारतीय मध्यवर्ग- श्याम सुन्दर घोष, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, सितम्बर-1982. पृ. 2
2. प्रेमचन्द : एक विवेचन- इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली- 1964, पृ. 170
3. कथाकार मन्नू भण्डारी- अनीता राजुरकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस- 1987
4. http//hdl. handle. net/10603/7403
5. यही सच है, एक दुनिया : समानान्तर - राजेन्द्र यादव, राधकृष्ण प्रकाशन दिल्ली - प्रथम संस्करण 1993, पृ. 235
6. वही- पृ. 235
7. नई कहानी की भूमिका- कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन दिल्ली- 1966, पृ. 18
8. एक दुनिया समान्तर - राजेन्द्र यादव, राधकृष्ण प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण - 1993, पृ. 233
9. वही पृ. 232-233, 10. वही पृ. 235, 11. वही पृ. 237
12. एक दुनिया समानान्तर- राजेन्द्र यादव, राधकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993, पृ. 238
13. मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य- गुलाब राव हाडे, विद्या बिहार कानपुर- 1987, पृ. 165, 14. वही, पृ. 240, 15. वही, पृ. 242, 16. वही, पृ. 245,
17. वही, पृ. 247, 18.वही, पृ. 248